(11)

# Program outcome of music vocal

संगीत एक ऐसी कला है जिसके द्वारा हम अपने भावों को संगीतमय ढंग से व्यक्त कर सकते हैं। भारतीय संगीत शास्त्रीय संगीत का विषय बड़ा विशाल है जिसको विद्यालयों , महाविद्यालयों मैं एक विषय के तौर पर पढ़ाया जाता है। शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाए जाने वाले विषय संगीत को शास्त्रीय संगीत कहा जाता है। शास्त्रीय संगीत अपने आप में ही एक बड़ा विषय है जिसमें से अन्य कई प्रकार के संगीत जन्म लेते हैं जैसे लोक संगीत पाश्चात्य संगीत फिल्म संगीत गुरमत संगीत इत्यादि। शिक्षा मानव के विकास का आधार है संगीत तथा ललित कलाओं की शिक्षा मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों के परिष्कार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक एवं दार्शनिक दृष्टि से भी संगीत शिक्षा महत्वपूर्ण है। संगीत को साधना एवं योग के लिए भी उत्तम माना गया है। संगीत शिक्षा का उद्देश्य योग्य शिक्षक कलाकार , श्रोता ,आलोचक ,शास्त्र कार आदि उत्पन्न करना और समाज को नैतिक उत्कर्ष की ओर ले जाना है।

संगीत की शिक्षा ग्रहण कर विद्यार्थी रोजगार के लिए संगीत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जा सकता है। जैसे स्कूल प्राध्यापक महाविद्यालय प्रोफेसर विश्वविद्यालय प्रोफेसर ,परफॉर्मिंग आर्टिस्ट ,डायरेक्टर ,साउंड प्रोफेशनल ,coaching institute, singer ,musician इत्यादि।

डॉ अंजना रानी

सहायक प्रोफेसर संगीत गायन

Principal
Pt. C.L.S Govt. College
KARNAL

# Course outcome of music vocal

सभी सेमेस्टर में पाठ्यक्रम में दिए गए रागों का पूर्ण परिचय, विशेषताएं तथा स्वरलिपि, छोटा ख्याल, बड़ा ख्याल ,लिखना और गाना सिखाया जाता है। तालो के परिचय विशेषताएं 1 गुण ,दुगुन ,तिगुन , चौगुन की लयकारियां लिखना और हाथ पर ताल देना सिखाया जाता है। भारतीय संगीत के लिए जिन विद्वानों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है उनमें से पाठ्यक्रम में दिए गए कुछ संगीत विद्वानों का जीवन परिचय बताया जाता है। अतः यह सभी पॉइंट्स है जो प्रत्येक सेमेस्टर में रहते हैं लेकिन राग ताल और विद्वानों के नाम सभी सेमेस्टर में भिन्न-भिन्न रहते हैं।

**सेमेस्टर एक**

प्रथम सेमेस्टर में विद्यार्थियों को संगीत के बारे में बताया जाता है और संगीत से संबंधित आवश्यक तत्वों की जानकारी दी जाती है जैसे स्वर, सप्तक, ठाट, राग, श्रुति ,नाद इत्यादि।

12 वीं शताब्दी तक भारतीय संगीत के इतिहास का वर्णन किया जाता है।

शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत में क्या संबंध है इसके बारे में बताया जाता है।

**द्वितीय सेमेस्टर**

प्रथम सेमेस्टर में विद्यार्थियों को संगीत के विषय में थोड़ी जानकारी प्राप्त हो जाती है इसलिए इस सेमेस्टर में थोड़ा आगे बढ़ते हुए संगीत के अन्य तत्वों जैसे अलंकार, वर्ण, ख्याल, तराना इत्यादि के बारे में भी विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान की जाती है।

मार्गी और देसी संगीत के बारे में बताया जाता है कि किस प्रकार यह दोनों संगीत अलग-अलग हैं।

गायन किस प्रकार से करना है इस संबंध में गायकों के गुण दोषों पर विचार विमर्श किया जाता है।

राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में संगीत की क्या भूमिका होती है इसके विषय में भी विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान की जाती है

**सेमेस्टर 3**

इस सेमेस्टर में विद्यार्थियों को भारतीय संगीत की कुछ गायन शैलियों के विषय में जानकारी प्रदान की जाती है और इनका गायन किस प्रकार से किया जाता है यह भी सिखाया जाता है।

संगीत के अन्य तत्वों जैसे आविर्भाव तिरोभाव, नायक नायकी ,राग की जाति से संबंधित जानकारी दी जाती है।

संगीत विद्वान भरतमुनि, मतंग और पंडित लोचन द्वारा श्रुतियो पर स्वरों की स्थापना किस प्रकार की गई इसके बारे में बताया जाता है।

Principal
Pt. C.L.S Govt. College
KARNAL

आधुनिक समय में संगीत के शैक्षणिक और सांस्कृतिक पक्ष के प्रचार प्रसार में विज्ञान की भूमिका पर प्रकाश डाला जाता है।

**सेमेस्टर 4**

भारतीय संगीत की अन्य गायन शैलियों के विषय में विद्यार्थियों को अवगत कराया जाता है जैसे गीत, भजन, टप्पा, चतुरंग और तीन वर्ण इत्यादि।

संगीत से संबंधित अन्य तत्वों जैसे ग्राम मूर्छना

तानपुरा सहायक नाद के बारे में बताया जाता है। पुंडरीक विट्ठल और रामा मातेय जी द्वारा की गई श्रुतियों पर स्वरों की स्थापना पर भी विचार विमर्श किया जाता है।

**सेमेस्टर 5**

स्वरलिपि पद्धति का विकास कैसे हुआ और इस पद्धति के गुण और दोषों के बारे में विद्यार्थियों को बताया जाता है।

ललित कला में संगीत का क्या स्थान है इस विषय पर विद्यार्थियों को विशेष जानकारी प्रदान की जाती है।

रागों को गाने बजाने का समय निश्चित होता है इस विषय से संबंधित विद्यार्थियों को रागों के समय सिद्धांत की जानकारी प्रदान की जाती है।

**सेमेस्टर 6**

17 वी 19वीं शताब्दी में संगीत का ऐतिहासिक वर्णन किया जाता है। जिससे विद्यार्थियों को इस शताब्दी में संगीत की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

हरियाणा और पंजाब के लोक संगीत के विषय में विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान की जाती है।

वैदिक काल ,मध्यकाल, तथा आधुनिक काल में वाद्यों के वर्गीकरण के बारे में बताया जाता है।

**डॉक्टर अंजना रानी**

**सहायक प्रोफेसर संगीत गायन**

Principal
Pt. C.L.S Govt. College
KARNAL